Elementary Computer
Application Software

According to New Syllabus (CBCS Pattern)

Authors

Dr. Vikas Kumar
M.Com, MBA Finance, P.hd
Assistant Professor
Department of Commerce,
& Management Studies
Marwari College, Ranchi

Prakash Kumar
M.Tech (CSE), M. Phil, MCA
Department of Computer
Application
Marwari College, Ranchi

SHIKSHA SAGAR PUBLISHER & DISTRIBUTORS

पारम्परिक
औषधीय ज्ञान

प्रधान सम्पादक : डॉ. उमेश नन्द तिवारी
सह सम्पादक : डॉ. राम कुमार

PUBLISHER :-
Jharkhand Jharokha
Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob.- 09973112040, 07979711886
E-mail : jh.jharokharnc@gmail.com

ISBN : 978-93-94279-62-9

मूल्य : 200/-

पारम्परिक औषधीय ज्ञान प्रधान सम्पादक : डॉ. उमेश नन्द तिवारी

पारम्परिक
औषधीय ज्ञान

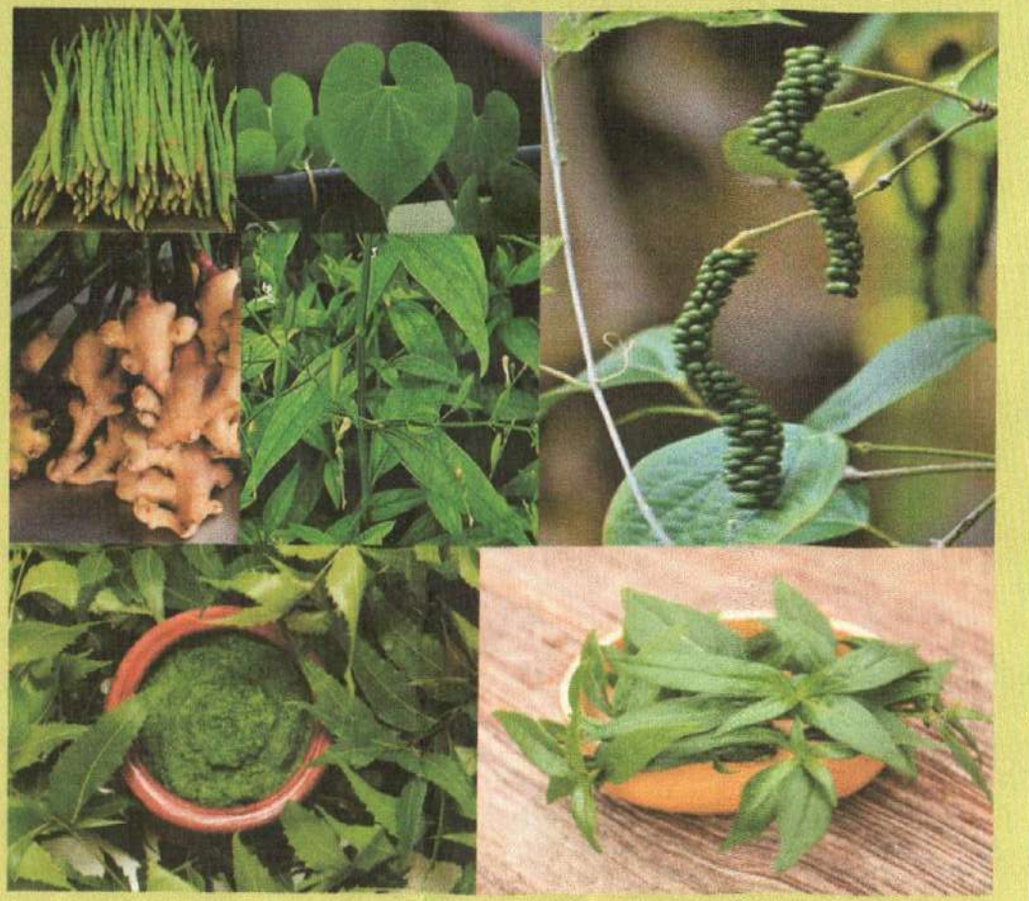

प्रधान सम्पादक : डॉ. उमेश नन्द तिवारी
सह सम्पादक : डॉ. राम कुमार

पारम्परिक
औषधीय ज्ञान

प्रधान सम्पादक :- डॉ. उमेश नन्द तिवारी

सह सम्पादक :- डॉ. राम कुमार

सम्पादक मंडल :- डॉ. राम कुमार, डॉ. अहिल्या कुमारी, डॉ. नरेन्द्र दास, डॉ. उपेन्द्र कुमार, तारकेश्वर सिंह मुण्डा, डॉ. अजीत मुण्डा, करम सिंह मुण्डा, जयप्रकाश उराँव, डॉ.अवध बिहारी महतो, डॉ. शैलेश कुमार महतो, डॉ. अमित कुमार, डॉ. बिजय कुमार साहु, डॉ. संजय कुमार, कुमारी कंचन वर्णवाल, विकास उराँव, सरोज कुमारी खलखो, नीलू कुमारी, शकुन्तला बेसरा, अनुजा कैथर, बसंत कुमार, मोहित सेठ, मालती कुमारी, अशोक कुमार एवं विनिता तिर्की।

ISBN : 978-93-94279-62-9

प्रथम संस्करण : 2023

सर्वाधिकार © : सह संपादक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा

दुकान नं.- डी. जी. 03, न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन नं. 834001
मो. 09973112040, 07979711886
E-mail : jh.jharokharnc@gmail.com

मूल्यः 200

PARAMPARIK AUSHDHIYA GYAN

CamScanner

About Chief Editor

Sanjeev Kumar Dey is working as Associate Professor in the Department of History in Government Kamalanagar College in the state of Mizoram in northeast India. He has authored three books and attended numerous National and International Seminars. He has also organised seminars sponsored by Indian Council of Historical Research (ICHR). He has in his credit numerous publications in journals (National, International and UGC Care list). Recently one of his paper got published from Italy. His interest area is Science, Technology and Medicine and also areas in recent trends.

₹ 349

ISBN 978-93-95387-02-6

9 789395 387026

DOLPHIN
GROUP OF PUBLICATION
Dhanbad, Jharkhand

RECENT ADVANCED IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

CHIEF EDITOR
SANJEEV KUMAR DEY

DOLPHIN

RECENT ADVANCED IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

CHIEF EDITOR
SANJEEV KUMAR DEY

खोरठा साहित्यकार श्याम सुन्दर महतो श्याम जी का रचना शिल्प

अमित कुमार*

परिचय

श्याम सुंदर महतो जिनके नाम के शुरूआत में भी श्याम और उपनाम भी श्याम है। धनबाद जिले के खेशमी गांव में उनका जन्म हुआ, लेखन के प्रति उनकी रूचि शुरू से ही थी, चाहे वो अध्ययन काल रहा हो, या उनका सेवा काल, उन्होंने लेखनी को अपने से सहेजे रखा। श्याम सुंदर महतो खोरठा जगत के सुविख्यात साहित्यकार हैं- इनका नाम बड़े ही समादर से लिया जाता है खोरठा भाषा साहित्य जगत में उन्हें यह गौरव उनके बहुआयामी योगदान से प्राप्त हुआ है, उनके तीन काम हैं–

1. लिखना
2. लिखना
3. लिखना।

इनके पिता का नाम स्व. केदारनाथ महतो व माता का नाम गंगामणि देवी है। श्रीमति-इन्दुबाला इनकी जीवन संगिनी हैं। इनकी रचनाओं में मिट्टी (मातृभूमि) जिन्दगी के दुःख-तकलीफ, शहीदों की गाथाओं की भरमार है।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्याम सुंदर महतो का रचनात्मक उद्देश्य अपने समकालीन समाज के रूढ़ीवादी, अतीतजीवी मनुष्य को बदलकर एक वैज्ञानिक,

* सहायक प्राध्यापक (अनुबंध), जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची, राँची विश्वविद्यालय राँची ई-मेलः- amittkmr@gmail.com

मानवकारी, शोषण मुक्त मनुष्य के निर्माण की साहित्यिक पृष्ठभूमि तैयार करती है। इनके व्यक्तित्व का बड़प्पन है कि ये अपने समकालीन तथा नए रचनाकारों को पूरा सम्मान देते हैं और उन्हें गंभीरता से पढ़ते तथा चर्चा करते हैं। उन्होंने चर्चाओं में दूसरे के लेखन का उद्धरण अवश्य दिया, पर उन्हें अपनी रचनाओं पर बात करते नहीं सुना। श्याम सुंदर महतो हिन्दी, खोरठा साहित्य के ऐसे कछावर स्तंभ और रचनाकार हैं, जो अपने समय और साहित्य का सही अर्थों में प्रतिनिधित्व करते हैं, दुनिया की तरक्की तो कई लोग करते हैं, लेकिन इस तरक्की की घुड़दौड़ में मानव और मानवता कहाँ से कहाँ पहुंच गयी। इस पर तो एक संवेदनशील, व्यक्ति, कवि, लेखक, साहित्यकार ही सोचता है। इस दृष्टि से महतो काफी संवेदनशील रहे हैं। इनकी चिन्ता का केन्द्र व्यक्ति, सामाजिक, सामूहिक तीनों ही रूपों में है। श्याम सुंदर महतो कालेखन एक बैचेन आदमी का रचनात्मक सफर है। ऐसा आदमी, जो दुनिया के हर रंग को देखता है, परखता है, लहरों के बीच डोलता उतरता है और हर लहर से, लहर के हरेक कतरे से रिश्ता जोड़ता है, और फिर आगे बढ़ता है। महतो जिन्दगी के सफर में अपने समय की हर सुबह-सांझ को हर क्षण जीते हैं, उजाले को अपने भीतर समेटते हैं, और अंधेरों में लिपटते हुए उन्हें भी अपना हम सफर बना लेते हैं। ये अंधेरे-उजाले के भीतर अंतरम में भी गूँथे लगते हैं। दोनों भीतर चलने वाली एक और यात्रा के समान हैं। उनकी बाहर की दुनिया बहुत बड़ी है और इसीलिए वे अपने समय के अपने जीवन की हर सामाजिक बात पर अपनी बात कहते हैं- जमाने को, जमाने वालों को संबोधित करते हैं, और इसीलिए अपने समय के एक प्रवर्तक रचनाकार बन जाते हैं।

विशिष्ट शब्द : लोक साहित्य, सशक्त, मौलिक

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र प्राथमिक स्रोतो से प्राप्त सूचनाओं को एकत्रित करने के बाद तैयार किया गया है। सूचना एकत्रित करने हेतु खोरठा भाषा के प्रमुख साहित्यकारों से मुलाकात करके इनके तथ्यों का संग्रहण हुआ है। साथ ही शोध पत्र श्याम सुन्दर महतो पर आधारित है जिसके कारण उनके गाँव के पाहान, बुजुर्ग महिला एवं पुरूषों को प्राथमिकता दी गई है। प्राथमिक आंकड़ा संग्रहण हेतु अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, फोटोग्राफी आदि शोध प्रविधियों का प्रयोग हुआ है। द्वितीय स्रोत के रूप में खोरठा लोक साहित्य से संबंधित पुस्तकों को चयन करके शोध में सम्मिलित की गई।

बिहार-झारखंड के
अल्पख्यात हिन्दी साहित्यकार
प्रो. नागेन्द्र कुमार शर्मा
डॉ. राजु प्रसाद
डॉ. किरण कुमारी
डॉ. तोषी
डॉ. राम स्नेही राम
श्री जितेन्द्र कुमार मेहता
सुश्री रीना कुमारी
संपादक द्वय
डॉ. सुनीता यादव, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
बिहार-झारखंड के अल्पख्यात हिन्दी साहित्यकार
डॉ. सुनीता यादव
जन्म-तिथि : 9 जून,1987
जन्म-स्थान : लखनऊ(उत्तर प्रदेश)
पिता : श्री सुरेन्द्र सिंह यादव
शिक्षा : एम. ए., पीएच. डी.
(लखनऊ विश्वविद्यालय)
संप्रति : एसोसिएट प्रोफेसर
मोबाइल नं. : 9835152016
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
जन्म-तिथि : 11अक्टूबर,1988
माता : श्रीमती प्रतिमा देवी
मोबाइल नं. : 7631058055
समदर्शी प्रकाशन
प्लॉट नम्बर-152, विक्रम एंक्लेव,
शालीमार गार्डन, साहिबाबाद,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश- 201005
मोबाइल नम्बर : 9599323508
समदर्शी प्रकाशन
9 788119 190485
₹175

आदिवासी जीवन-मूल्यों को सहेजती रचनाकार सावित्री बड़ाईक

- डॉ0 सीमा चौधरी

हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय फलक पर उभरता एक विशिष्ट नाम है- सावित्री बड़ाईक का, इन्होंने अपनी कविताओं और समीक्षाओं से पिछले कई वर्षों में एक पुख्ता पहचान बनाई है। इनकी रचना के मूल में है, झारखण्डी अस्मिता। इन्होंने देशज शब्दों में अपने प्रदेश झारखण्ड के सांस्कृतिक वैशिष्ट्य, आदिवासी जीवन मूल्य, प्राकृतिक परिवेश, अखरा, वन पतरा, श्यामल टुकू टंगरा, झरिया, झरनों के प्राकृतिक सौंदर्य को उभारते हुए झारखण्डवासियों की जिजीविषा, कला, हुनर- कौशल, कर्मशील जीवन और आदिवासियों के प्रकृति प्रेम और जग के प्रति लगाव -जुड़ाव को स्वर दिया है।

सावित्री बड़ाईक का जन्म 6 जुलाई, 1971 ई0 को झारखण्ड के सिमडेगा ज़िले के अन्तर्गत गोतरा, सुन्दरपुर नामक गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा राँची विश्वविद्यालय से हुई। वर्तमान में ये राँची विश्वविद्यालय के सूरज सिंह मेमोरियल महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापिका के रूप में अपना योगदान दे रही हैं। बेहद शांत और शालीन व्यक्तित्व की धनी सावित्री बड़ाईक भावनात्मक स्तर पर झारखण्ड में रची-बसी हैं। इसी कारण इन्होंने झारखण्डी अस्मिता को राष्ट्रीय फलक तक ले जाने का कार्य किया है। ध्यातव्य है कि महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,वर्धा के एम0ए0 हिन्दी के पाठ्यक्रम में नव सामाजिक विमर्श के तहत् कविता खण्ड के इकाई-5 में रामदयाल मुण्डा की तीन कविताएँ 'कथन शालवन के अंतिम शाल का' सहित तीन कविताओ के लिए इकाई लेखन का कार्य सावित्री बड़ाईक ने किया है। इसी में कविता खण्ड के इकाई-6 में ग्रेस कुजूर की तीन कविताएँ 'एक और जनी शिकार', 'हे समय के पहरेदारों', 'कलम को तीर होने दो'- इन तीनों कविताओं पर इकाई-लेखन के साथ ही कहानी खण्ड के लिए इकाई-3 में वरिष्ठ आदिवासी कथाकार रोज केरकेट्टा की कहानी (मैना) के लिए इकाई लेखन का कार्य किया है। सागर विश्वविद्यालय के लिए रोज केरकेट्टा की कहानी 'पगहा जोरी-जोरी रे घाटों' के लिए कहानी पर इकाई लेखन भी किया है।

अपनी प्रतिभा को सावित्री बड़ाईक ने पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के संपादक के रूप में भी विस्तार दिया है। जे0एन0यू0, नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'आदिवासी साहित्य' के जुलाई-दिसम्बर, 2016 के रंग रोगन (कला) विशेषांक के लिए अतिथि सम्पादक का कार्य किया। प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'शिशिर समग्र' नामक पुस्तक का संपादन किया। ग्रेस कुजूर की कविता पुस्तक 'एक और जनी शिकार' में

डॉ. मिथिलेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
पी.जी. समाजशास्त्र विभाग एवं समन्वयक, मानवाधिकार शिक्षा,
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड
जन्म : 6 नवम्बर 1963
शिक्षा : एम.ए. समाजशास्त्र, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार
पी–एच.डी., रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड

• प्रकाशित पुस्तकें :

1. जनजातीय समाज में शिक्षा और आधुनिकीकरण
2. मानव अधिकार : एक विमर्श

सह–सम्पादक : नवज्योति, अन्तर्वैषयिक पियर रिव्यूड रेफ्रीड जर्नल

अतिथि सम्पादक : सम्बोध, निर्मला देवी अध्ययन एवं शोध संस्थान, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

सदस्य : 1. पियर रिव्यूड जर्नल 'नवज्योति'
2. जर्नल ऑफ सोशियो–एजुकेशनल एण्ड कल्चरल जर्नल

- यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित एक दीर्घ शोध परियोजना पूर्ण कर चुके हैं।
- एक दर्जन से अधिक शोध–पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में प्रकाशित।
- इण्डियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी तथा भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा के आजीवन सदस्य।
- लेखक के निर्देशन में 10 शोध छात्र/छात्राएं पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त कर चुके हैं तथा 06 शोधरत हैं।
- रिसोर्स पर्सन तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में कई व्याख्यान दे चुके हैं।

Vijay Prakashan Mandir Pvt. Ltd.
Publisher of higher Academic Books
B. 21/122, F-I-A, Baijnattha, Varanasi, U.P.-221010
Website : vpmandir.com
E-mail : vijayprakashanmandir@gmail.com
Ph. : 0542- 2330144, 2334636, 9935022371

ISBN 978-93-95430-03-6

मानव अधिकार

एक विमर्श

सम्पादक

डॉ. मिथिलेश कुमार

जनवरी-2023

13/12/23

VPMANDIR

MANAV ADHIKAR : EK VIMARSH
by Dr. Mithilesh Kumar
© **Publisher**

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without the prior permission of the copyright owner and the publisher.

ISBN : 978-93-95430-03-6

मूल्य : ₹ **1000.00**

संस्करण : जनवरी २०२३

Edition : January 2023

प्रकाशक

विजय प्रकाशन मन्दिर (प्रा) लि.

बी. 21/122, एफ-१-ए, बैजनत्था, वाराणसी -221010
Website : **vpmandir.com**
E-mail : vijayprakashanmandir@gmail.com
दूरभाष : 2334636, 2330144 (टेली फ़ैक्स)

मुद्रक

कल्पना प्रेस

रामकटोरा, वाराणसी

योगदानकर्ता

1. **डॉ. मिथिलेश कुमार**, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग एवं समन्वयक, मानव अधिकार शिक्षा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, Email : mithileshkumar2012@yahoo.com
2. **प्रो. सुभी धुसिया**, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, Email : subhi.socio@ddugu.ac.in, drsubhi.dhusia2011@gmail.com
3. **प्रखर पाण्डेय**, शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, Email : prakharp064@gmail.com
4. **विमल किशोर सिन्हा**, सेवानिवृत्त पुलिस महानिरीक्षक, झारखण्ड, पूर्व गेस्ट फैकल्टी, मानवाधिकार शिक्षा, राँची विश्वविद्यालय और पूर्व गेस्ट फैकल्टी, अपराध विज्ञान, झारखण्ड रक्षा शक्ति विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
5. **डॉ. सुमन श्रीवास्तव**, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, विधि विभाग, साईनाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
6. **मनोज कुमार**, व्याख्याता, सिल्ली कॉलेज, सिल्ली, झारखण्ड।
7. **राजकुमार**, सहायक प्राध्यापक, एस.एस.एम.एस डिग्री कॉलेज, तरहसी, पलामू, झारखण्ड।
8. **डॉ. प्रियंका कुमारी**, सहायक प्राध्यापक (अनुबंध), समाजशास्त्र विभाग, राँची महिला महाविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
9. **डॉ. रश्मि**, सहायक प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड।
10. **डॉ. वरुण कुमार मुंडा**, अतिथि संकाय, समाजशास्त्र विभाग, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
11. **बिनीता रानी टोप्पो**, सहायक प्राध्यापिका, समाजशास्त्र विभाग, संताल परगना महाविद्यालय, सिदो कान्हु मूर्मू विश्वविद्यालय, दुमका, झारखण्ड।
12. **डॉ. पुरुषोत्तमलाल विजय**, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ गंगापुर परिसर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश। Email : purusottamlalvijay@gmail.com
13. **डॉ. उमेश कुमार** [illegible], सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, मारवाड़ी कॉलेज, सम्बद्ध–राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड। Email : uk212060@gmail.com
14. **पाटला कुमारी**, अतिथि संकाय, समाजशास्त्र विभाग, मांडर कॉलेज, मांडर
15. **प्रमोद कुमार ठाकुर**, शोध छात्र, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

तथा सांस्कृतिक अधिकारों के बारे में बताया गया है। इनके अंतर्गत आने वाले प्रमुख अधिकार निम्नलिखित हैं : सामाजिक सुरक्षा का अधिकार, समान काम के लिये समान वेतन का अधिकार, काम करने का अधिकार, आराम तथा फुर्सत का अधिकार, शिक्षा तथा समाज के सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने का अधिकार।

उपसंहार : मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसे संविधान सम्मत अधिकारों के साथ–साथ मानव जीवन से जुड़े मूल अधिकार प्राप्त हों और उनका वह ठीक ढंग से प्रयोग कर सके। मानवाधिकारों का प्रयोग करके मनुष्य अपने विकास की गति को ग्रहण कर सकता है। मनुष्य को जन्म से हवा, पानी, प्रकाश की तरह ऐसे अनेक अधिकार प्राप्त हैं, जो उसके विकास में सहयोगी बनते हैं, जैसे मनुष्य जन्म से ही एक–दूसरे के समान है, सभी को अन्न, वस्त्र, मकान और विचार अभिव्यक्ति की सुविधाएँ चाहिये। कोई किसी के मार्ग में बाधा उत्पन्न न करें। किसी को हानि न पहुँचाये, किसी की सम्पत्ति का बलपूर्वक प्रयोग न करें तथा उसका शारीरिक और बौधिक शोषण न करें, इसके लिये अपनी सुख–सुविधाओं हेतु दूसरों की सुख–सुविधाओं पर अतिक्रमण न करें। मानवाधिकारों के साथ मनुष्य के मूलभूत अधिकार को सुरक्षित और संरक्षित करने के लिये एक ओर जहाँ कानूनी प्रक्रिया की अनुपालना करवाता है, वहीं इस बात के लिये भी प्रयत्नरत रहता है कि मानवाधिकारों के संरक्षण का विषय मनुष्य के बाल्यकाल से ही उसके संस्कार में समावेश हो जाये।

सन्दर्भ

1. राष्ट्रीय मानवाधिकार, 27 दिसम्बर, 2010.
2. वाजपेयी, शालिनी, भारत में मानवाधिकार का संरक्षण एवं विकास, दृष्टि, 7 जुलाई, 2022.
3. लाल, रमन बिहारी एवं सुनीता पलोड़, शिक्षा और मानवाधिकार; शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2010, पृ. 267–268.
4. संयुक्त राष्ट्र का घोषणा–पत्र और अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की संविधि, संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र, नई दिल्ली, 1995, पृ. 2–3.
5. पंत, पुष्पेश, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, टाटा मैकग्राहिल प.क. लि., नई दिल्ली, 2008, पृ. 163–165.
6. संयुक्त राष्ट्र का घोषणा–पत्र और अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की संविधि, संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र, नई दिल्ली, 1995, प्रस्तावना.
7. कपूर, श्याम किशोर, अन्तर्राष्ट्रीय विधि, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद, 2004, पृ. 635.
8. व्यास, मीनाक्षी, नारी चेतना और सामाजिक विधान, रोशनी पब्लिकेशंस, कानपुर, 2008, पृ. 19–20.
9. वसु, डी.डी., भारत का संविधान : एक परिचय, प्रेन्टिसहॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लि., 1989, पृ. 324.
10. गुप्त, मदन, क्या हों छात्रों के मानव अधिकार, मानवाधिकार : नई दिशाएँ, वार्षिक, अंक–2, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग, नई दिल्ली, 2005, पृ. 143–147
11. गोठवाल, गौरव एवं अजय कुमार मीणा, 'मानवाधिकार कानून एवं समाज' : वर्तमान परिप्रेक्ष्य, रिसर्च एनालिसिस एण्ड एवील्यूशन, मार्च, 2011, वा. 2, अंक 18, पृ. 143।

●

महिलाओं का मानवाधिकार

डॉ. उमेश कुमार

महिलाओं के अधिकार, वह अधिकार हैं, जो प्रत्येक महिला या बालिका का विश्वव्यापी समाजों में पहचाना हुआ जन्मसिद्ध अधिकार है। 19वीं सदी में महिला अधिकार संग्राम और 20वीं सदी में फेमिनिस्ट आंदोलन का यह आधार रहा है। कई देशों में यह प्रचलित नहीं है। कई देशों में व्यापक तौर पर मानवाधिकार का दावा निहित ऐतिहासिक और परम्परागत झुकाव के नाम पर महिलाओं और बालिकाओं का हक पुरुषों और बालकों के पक्ष में दे दिया जाता है। महिलाओं के अधिकार के विषय में कुछ हक अखंडता और स्वायत्तता की आजादी, यौन हिंसा से मुक्ति, मत देने की आजादी सार्वजनिक पद धारण करने की आजादी, कानूनी कारोबार में प्रवेश करने की आजादी, पारिवारिक कानून में बराबर हक, काम करने की आजादी और समान वेतन की प्राप्ति, प्रजनन अधिकारों की स्वतंत्रता, शिक्षा–प्राप्ति का अधिकार। प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति व्यावहारिक जीवन में पुरुषों की तुलना में श्रेष्ठ रही ही हैं, शास्त्रों में उनका दर्जा भी उच्च रहा। सन् 10वीं शताब्दी ई. के बाद भारत में महिलाओं की स्थिति विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों के कारण दिन–प्रतिदिन दयनीय होती गयी।

वर्तमान समाज अर्थवाद का दास–सा बनता जा रहा है। जहाँ सम्पत्ति संग्रह की अनियमितता से अधिक महत्त्व दिया जाता है। पूँजीवाद से सत्तावाद, तथा सत्तावाद, सम्पत्ति, विलासितावाद, भोगवाद की ओर बढ़ रहा है। वहाँ पर आदर्शात्मक मूल्यों का इस वर्तमान सनाज में कोई महत्त्व नहीं है। महिलाओं के अधिकारों के हनन के विविध तरीके हैं, जिसमें महिलाओं के साथ ही अबोध बालिकाएँ भी सदियों से पुरुषों द्वारा अधिकारों का हनन की शिकार रही हैं और आज भी हैं।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। नारी एक वह पहलू है, जिसके बिना किसी समाज की रचना संभव नही है। समाज में नारी एक उत्पादक की भूमिका निभाती हैं। नारी के बिना एक नये जीव की कल्पना भी नहीं कर सकते अर्थात् नारी एक सर्जक है, रचनाकार है। यह कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग होती है, फिर भी इस पित्रसत्तात्मक समाज में उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। पुत्र जन्म पर हर्ष तथा पुत्री जन्म पर संदेदना व्यक्त की जाती है। भारतीय समाज में आज भी पुत्रों को पुत्रियों से अधिक महत्त्व दिया जाता है। कुछ क्षेत्रों में जहाँ यह बदलाव

* सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, मारवाडी कॉलेज, राँची विश्वविद्यालय, राँची

पारम्परिक

औषधीय ज्ञान

प्रधान सम्पादक : डॉ. उमेश नन्द तिवारी
सह सम्पादक : डॉ. राम कुमार

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob.- 09973112040, 07979711886
E-mail : jh.jharokharnc@gmail.com

ISBN : 978-93-94279-62-9

9 789394 279629

मूल्य : 200/-

पारम्परिक औषधीय ज्ञान

प्रधान सम्पादक : डॉ. उमेश नन्द तिवारी

पारम्परिक

औषधीय ज्ञान

प्रधान सम्पादक : डॉ. उमेश नन्द तिवारी
सह सम्पादक : डॉ. राम कुमार

बिसय सूची

अनुक्रम		पृष्ठ संख्या
1. आम	डॉ. उमेश नन्द तिवारी	9
2. गूलर (डूम्बइर)	डॉ. राम कुमार	15
3. महुआ	डॉ. बिजय कुमार साहु	20
4. करंज	डॉ. अवध बिहारी महतो	26
5. नीम	डॉ. नरेन्द्र कुमार दास	30
6. बबूल	डॉ. नरेन्द्र कुमार दास	49
7. नींबू	डॉ. राम कुमार	56
8. पपीता	विकास उराँव	68
9. मूनगा	डॉ. अहिल्या कुमारी	71
10. सिंदवार	डॉ. अहिल्या कुमारी	73
11. तुलसी	डॉ. उपेन्द्र कुमार	75
12. चाकोड़ साग	सरोज कुमारी खलखो	77
13. चिरायता	डॉ. अहिल्या कुमारी	79
14. पुदीना	जय प्रकाश उराँव	81
15. बेंग साग	करम सिंह मुण्डा	85
16. अरंडी	डॉ. राम कुमार	88
17. इंद्रायन (डेम्बू)	तारकेश्वर सिंह मुण्डा	99
18. भटकटया	कुमारी कंचन वर्णवाल	101
19. अजवायन	मालती कुमारी	103
20. इलायची	डॉ. अमित कुमार	105
21. अदरक	डॉ. शैलेश कुमार महतो	107
22. प्याज	बसंत कुमार	110
23. लहसुन	मोहित सेठ	112
24. हल्दी	अनुजा कैथर	114

25. तिल	डॉ. संजय कुमार	121
26. जीरा	नीलू कुमारी	123
27. काली मिर्च	अशोक कुमार	125
28. उड़द	शकुन्तला बेसरा	130
29. मधुरस	विनिता तिर्की	132
30. परम्परागत चिकित्सा पद्धति में बेंगसाग	डॉ. अजीत मुण्डा	139

CamScanner

ScienceDirect

ISBN NO: 978-0-323-91149-8

Bio-Based Materials and Waste for Energy Generation and Resource Management

Present and Emerging Waste Management Practices

Volume 5 in Advanced Zero Waste Tools

2023, Pages 207-241

Chapter 7 - Co-digestion processes of waste: Status and perspective

Rajlakshmi [a], Dipak A. Jadhav [b], Swagata Dutta [a], Knawang Chunjji Sherpa [c], Komal Jayaswal [d], Sarveshwaran Saravanabhupathy [a], Kshirabdhi Tanya Mohanty [e], Rintu Banerjee [a], Jyoti Kumar [f], Rajiv Chandra Rajak [e]

[a] Agricultural and Food Engineering Department, Indian Institute of Technology, Kharagpur, West Bengal, India

[b] Department of Environmental Engineering, College of Ocean Science and Engineering, Maritime and Ocean University, Busan, Republic of Korea

[c] Microbial Processes and Technology Division, CSIR-National Institute for Interdisciplinary Science and Technology (CSIR-NIIST), Trivandrum, Kerala, India

[d] BlueDrop Enviro Pvt. Ltd, Bangalore, Karnataka, India

[e] Department of Botany, Marwari College, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

[f] University Department of Botany, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

Available online 12 May 2023, Version of Record 12 May 2023.

Show less ^

Outline | Share Cite

https://doi.org/10.1016/B978-0-323-91149-8.00010-7

Get rights and content

Abstract

Anerobic digestion (AD) is a conventional technology used for production of biogas from organic waste. Adoption of AD aids in waste remediation combined with renewable energy production in the form of biogas and nutrient recovery from the digestate. Most AD technology employs mono-digestion with single-substrate utilization. However, such technology suffers from various disadvantages such as instability of the digester, unavailability of a single substrate throughout the year, and low biogas yield. The simultaneous utilization of two or more substrates for anerobic digestion is effective in resolving the difficulties faced with mono-digestion by providing improved buffering capacity, biogas yield, better digestion stability, and substrate variability. The substrates can be of various types based on the source such as municipal organic waste, lignocellulosic agricultural biomass, and industrial waste. The anerobic co-digestion (AcoD) process has the advantage of utilizing substrates rich in nitrogen for balancing the C/N ratio during digestion. The present chapter illustrates the mechanism behind the co-digestion process and its influence on the different phases of biogas production. It also describes the different types of substrates based on their origin and the different process conditions required for improving the biogas yield. The chapter highlights the significance of process parameters and their role in biogas production, which has been discussed in detail along with the process kinetics which is applied using different mathematical models for analyzing and optimizing the digestion process. Characterization of substrates and microbial communities has also been emphasized along with the different approaches for pretreatment methods for improving the biogas yield. The downstream processing has been elucidated in the chapter discussing the upgradation of biogas through purification and its applicability for energy generation

बहने लगता है, तब वे नीलकंठ की भाँति हँसते-हँसते उसका पान कर जाते हैं। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी को चरितार्थ करनेवाले देशभक्तों की उत्कट गंध तो मलयागिरी चंदन की ऐसी सुगंध है, जो पार्श्ववर्ती निर्गंध निस्सार वेणु-विटपों को भी गंधमय कर देती है। इतिहास में जहाँ कहीं दपदप चाँदनी है, वस्तुतः इन्हीं देशभक्तों के बलिदानी चरित्रों से फूटने वाली चाँदनी है। माखनलाल चतुर्वेदी का पुष्प ऐसे ही आत्मोत्सर्ग की कामना से प्रयाण करने वाले दृढ़ चरित्र बलिदानियों के कदमों तले बिछ जाना चाहता है। माखनलाल चतुर्वेदी जी की रचनाओं में शासन की कठोरता के प्रति आक्रोश का भाव उतना नहीं, जितनी बलिदान की प्रेरणा है। इनकी कविता व्यक्तिगत स्वार्थ के पहले देश को प्राथमिकता देने की प्रेरणा देती है। श्री नवल किशोर गौड़ ने ठीक कहा है-"यदि भारतेंदु की वाणी राष्ट्र के अधरों की वाणी है, मैथिलीशरण गुप्त की वाणी राष्ट्र के कई की वाणी है तो पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की वाणी राष्ट्र के मर्म की वाणी है"।[10] इस दृष्टि से उनका 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम सार्थक ही है।

संदर्भ सूची

1. सं. डॉ. नगेंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, संस्करण 1993, पृष्ठ संख्या-533
2. प्रेमी हरि कृष्ण, माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड संस दिल्ली 6 चौथा संस्करण-1970, पृष्ठ संख्या-9
3. प्रेमी हरिकृष्ण, माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड संस दिल्ली 6 चौथा संस्करण-1970, पृष्ठ संख्या-9
4. डॉ. नगेंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, संस्करण 1993, पृष्ठ संख्या-613
5. प्रेमी हरिकृष्ण, माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड संस दिल्ली 6 चौथा संस्करण-1970, पृष्ठ संख्या-79
6. प्रेमी हरिकृष्ण, माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड संस दिल्ली 6 चौथा संस्करण-1970, पृष्ठ संख्या-73
7. डॉ. नगेंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, संस्करण 1993, पृष्ठ संख्या-538
8. तुलसीदास, रामचरित्रमानस, अयोध्या कांड, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत 2067 दोहा संख्या-204, पृष्ठ संख्या-479
9. प्रेमी हरिकृष्ण, माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड संस दिल्ली 6 चौथा संस्करण-1970, पृष्ठ संख्या-95
10. शर्मा आनंद नारायण, सुकवि-समीक्षा भारती भवन पटना, चतुर्थ संस्करण, 1973

पत्रकारिता एवं जनसंवाद की विविध विधाओं में आदिवासी महिलाएं

*अमित कुमार

सारांश

शब्द अभिव्यक्ति हैं। शब्द परिवेश को प्रकट करते हैं। आधुनिक समाज में महिलाएं संभ्रान्त समझी जाने लगी हैं, इसीलिए वे महिलाएं कही जाती है। महिला शब्द से उस स्त्री की तस्वीर उभरती है जो साक्षर, जागरूक और शालीन पहनावे से सज्जित हो। इसमें तंगहाल मजदूर, कृषि-मजदूर और घरेलू स्त्रियां नहीं आती हैं। लेकिन यह भी सच है कि ऐसी स्त्रीयों की बड़ी संख्या है जो इस वर्ग की हैं और समाज निर्माण में इनका सबसे ज्यादा योगदान है। इस वर्ग की स्त्रीयां कठिन परिश्रम करती हैं उत्पादन और निर्माण के क्षेत्र में। इनके पास अनुभव का विशाल भंडार होता है।

पढ़ी-लिखी महिलाएं अपने इन्हीं अनुभवों को शब्दों में पिरोती हैं जो आम जीवन के अधिक निकट होता हैं। आदिवासी महिला साहित्यकारों के लेखन ऐसे ही हैं। एलिस एक्का और ग्रेस कुजूर का जीवन स्तर काफी ऊपर उठ चुका था। परंतु उनकी लेखनी में गांव, प्रकृति और ग्रामीण बसाहट ही है। निर्मला पुतुल और वंदना टेटे की कविताओं में ग्रामीण संजीदगी मुखर है। आदिवासी स्त्रियां जो अभी-अभी लिख रही हैं उनके हृदय में भी गांव बसा हैं। उनके सपने गांवों की वर्तमान विषम स्थितियों से मुक्ति और जीवन में आनन्द, उमंग और स्वतंत्रता

* सहायक प्राध्यापक (अनुबंध), जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची, राँची विश्वविद्यालय, राँची

ISBN NO.'978-981-19-8774-8

Chapter 19
Recent Advancements in Agricultural Residue Valorisation into Bio-Products

Sarveshwaran Saravanabhupathy, Rajlakshmi, Sunipa Sen, Gour Gopal Satpati, Subhara Dey, Rintu Banerjee, Shivani Goswami, Lalit Goswami, Shalini Mehta, and Rajiv Chandra Rajak

Abstract Traditional and local agriculture relied on circular sustainability models; however, contemporary agriculture presently generates tonnes of garbage that are piled up in landfills and have unfavourable effects rather than being reintroduced into the production chain for a future use. However, these agricultural waste products are a rich source of bioactive substances. One of the main goals of both industrialised and developing nations is waste recycling. The biorefineries stand out as the most ideal business platform to create the essential chemical changes in relation to lignin valorisation and the circular economy. Further, the generation of

S. Saravanabhupathy · Rajlakshmi
Agricultural and Food Engineering Department, IIT Kharagpur, Kharagpur, West Bengal, India

S. Sen · G. G. Satpati
Department of Botany, Bangabasi Evening College, University of Calcutta, Kolkata, West Bengal, India

S. Dey
P.K. Sinha Centre for Bioenergy and Renewables, IIT Kharagpur, Kharagpur, West Bengal, India

R. Banerjee
Agricultural and Food Engineering Department, IIT Kharagpur, Kharagpur, West Bengal, India

P.K. Sinha Centre for Bioenergy and Renewables, IIT Kharagpur, Kharagpur, West Bengal, India

S. Goswami
Department of Biotechnology, Brahmanand College, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh, India

L. Goswami
Department of Chemical Engineering, Chungbuk National University, Cheongju, Republic of Korea

S. Mehta
Department of Botany, Ranchi Women's College, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

R. C. Rajak (✉)
Department of Botany, Marwari College, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

© The Author(s), under exclusive license to Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2023

K. G. Ramawat et al. (eds.), *Agricultural Waste: Environmental Impact, Useful Metabolites and Energy Production*, Sustainable Development and Biodiversity 31,
https://doi.org/10.1007/978-981-19-8774-8_19

ISBN NO: 978-0-323-90631-9

Biomass, Biofuels, Biochemicals
Microbial Lipids - Processes, Products, and Innovations
2022, Pages 161-189

Chapter 9 - Microbial lipids production by oleaginous yeasts

Rajiv Chandra Rajak [a], Rajlakshmi [b], Sarveshwaran Saravanabhupathy [b], Rintu Banerjee [b]

[a] Department of Botany, Marwari College, Ranchi University, Ranchi, India
[b] Agricultural and Food Engineering Department, Indian Institute of Technology, Kharagpur, India

Available online 15 July 2022, Version of Record 15 July 2022.

Show less
Outline | Share Cite

https://doi.org/10.1016/B978-0-323-90631-9.00001-6
Get rights and content

Abstract

Oleaginous microorganisms have the potential to convert an array of carbon sources into intracellular lipid molecules resulting in high lipid production. These lipids are also called single cell oils (SCOs) that are produced during nitrogen limitation and excess of carbon source conditions in the stationary phase of microbial growth. Depending upon different types of oleaginous species such as yeast, microalgae, bacteria, and filamentous fungi, microbial lipids differ in their fatty acid profile composition and are thus, suitably utilized in different industrial applications. Among different oleaginous species, oleaginous yeasts are considered as a prime candidate for microbial lipid or oil production owing to their high lipid content that, in turn, can be valorized into different products of commercial interest. Oleaginous yeasts have received attention because of their easy acclimatization to the surroundings and ease of genetic modifications that produce high cell density in terms of lipid or oils utilizing low-cost raw materials. In this chapter, we focus on the oleaginous yeasts and advantages of yeasts lipid, the biochemical mechanism of yeasts lipid accumulation, lipid content and fatty acid compositional analysis, innovation and state of the art in oleaginous yeast lipid production, applications of derived lipids along with major issues in lipid production technology.

Recommended articles

References (0)

Cited by (2)

Lipid Production from Native Oleaginous Yeasts Isolated from Southern Chilean Soil Cultivated in Industrial Vinasse Residues

ISBN NO: 978-0-323-91307-2

CHAPTER FOUR

Effect of the COVID-19 on access to affordable and clean energy

Knawang Chhunji Sherpa[a], Gour Gopal Satpati[b], Navonil Mal[c], Agatha Sylvia Khalko[d], and Rajiv Chandra Rajak[d]

[a]Microbial Processes and Technology Division, CSIR-National Institute for Interdisciplinary Science and Technology (NIIST), Thiruvananthapuram, Kerala, India
[b]Department of Botany, Bangabasi Evening College, University of Calcutta, Kolkata, West Bengal, India
[c]Department of Botany, University of Calcutta, Kolkata, West Bengal, India
[d]Department of Botany, Marwari College, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India

1. Introduction

The present pandemic situation caused by severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2) shows rapid loss in human civilization. The current data (10th September 2021) shows 4,602,882 confirmed deaths and 223,022,538 active cases around the world due to this deadly virus.[1] Report says, human-to-human transmission is the most causing factor of this disease, which resulted in complete lockdown of town and cities globally.[2,3] Several researches have been performed on restoration of civilization in terms of social, environmental, and economic aspects.[4–6] Public health management during coronavirus disease-19 (COVID-19) is one of the most concerned topics, which leads the developments in medical technology including molecular-based technology, nanotechnology, advanced biosensing, and immunotherapeutics.[4,7–9]

The concept of sustainability in the recent decades has attracted global attention focusing on protecting the environment while providing socio-economic benefit and development to the present as well as future generations which is based on the concept of social, economic, and environmental sustainability.[10] Several goals and targets have been implemented in global political agendas toward the adoption of a sustainable route. Keeping this objective in mind, the United Nations in September 2015 adopted the 17 interlinked sustainable development goals (SDGs) that were designed as a shared blueprint for achieving a sustainable future for the people and the planet under the 2030 Agenda for Sustainable Development. The partnership among developed and developing countries came up in the form of

Copyright © 2022 Elsevier Inc.
All rights reserved.

ISBN NO: 9781119857747

Important - Please read proofing instructions on last page

Chapter

5

Application of Geno-Sensors and Nanoparticles in Gene Therapy: A New Avenue for Gene Delivery

Sharmili Roy[1], Monalisha Ghosh Dastidar[2], Vivek Sharma[3], Beom Soo Kim[4] and Rajiv Chandra Rajak[5]*

[1]*Division of Oncology, School of Medicine, Stanford University, CA, USA*
[2]*Research School of Engineering, College of Engineering and Computer Science, Australian National University, ACT, Australia*
[3]*Department of Chemical Engineering, Indian Institute of Technology Bombay, Powai, Mumbai, Maharashtra, India*
[4]*Department of Chemical Engineering, Chungbuk National University, Cheongju, Republic of Korea*
[5]*Department of Botany, Marwari College, Ranchi University, Ranchi, Jharkhand, India*

Abstract

Rapid development of nanotechnology in less than two decades has led to the evolution of novel DNA and RNA delivery systems for gene therapy, which has become a significant technique for the advancement of genetic engineering. The treatment of genetic disorders has been promising, and recently, a wide variety of nanomaterials including carbon nanotubes, chitosan-based nanoparticles, dendrimers, gold nanoparticles, inorganic nanoparticles, peptide-based nanoparticles, protein and liposomes are being investigated as vectors for gene delivery. These vectors are used to target cells, and each type of vector has their own advantages and limitations. A major area of focus in this chapter will be the use of nanoparticles as nonviral carriers for gene delivery purposes considering their favorable characteristics, such as their nanometric size, high surface to volume ratio, stability, ability to undergo surface modifications, encapsulate nucleic acids and release them inside target cells, and lack of immunogenicity. We have summarized the advantages of immune response, design flexibility and effective biological system with

**Corresponding author*: rajivmbt@gmail.com

Mainak Mukhopadhyay and Arindam Kuila (eds.) Nanomaterials in Clinical Therapeutics: Synthesis and Applications, (177–205) © 2022 Scrivener Publishing LLC

ज्ञान दर्पण

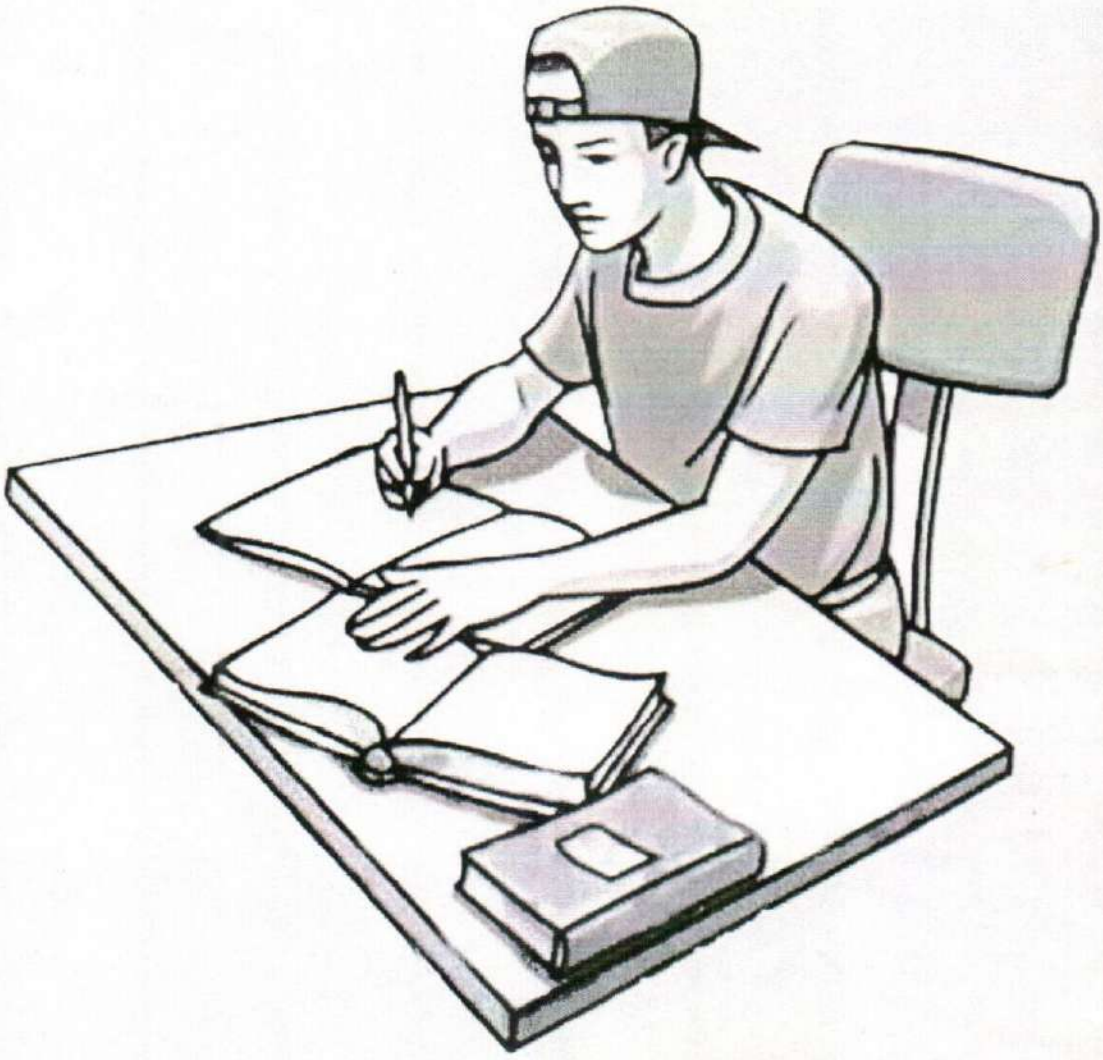

डॉ. अशोक कुमार महतो

व्यूह रचनात्मक प्रबन्ध

National Education Policy (NEP)- 2020, Four Year Under Graduate Program (FYUGP) for B.Com, B.B.A., M.Com

Authors

Dr. Amar Kumar Chaudhary
Associate Professor
University, Department of Commeres and Business Management
Ranchi University, Ranchi
Former Registrar,
Ranchi University, Ranchi

Dr. Tarun Chakraborty
M.COM., L.L.B., Ph.D
Assistant Professor,
Department of Commeres,
Marwari College,
Ranchi University Ranchi

Dr. Rahul Kumar
Ph.D, UGC NET (Commeres),
PGPMI (XLRI Jamshedpur)
M.COM, (Finance),
M.A. Education, B.Ed

विश्व-ग्रंथमाला

स्त्री का उद्विकास

एक गहन नृतत्वशास्त्रीय अध्ययन

आदिम युग की स्त्री का जीवन कैसा था? उस जीवन ने स्त्री के विकास पर कौन–से प्रभाव छोड़े? पुरुष से अपनी दैहिक भिन्नता और प्रजनन ने कैसे स्त्री को भिन्न रूप दिया? आदिम युग की मानवता के संघर्ष में स्त्री के अवदान की गहन पड़ताल करती पुस्तक.

इतिहास, संस्कृति, नृविज्ञान की व्यापक … बीच स्त्री के अस्तित्व का गहरा विवेचन

एक रोचक, शोधपूर्ण और अंतर्दृष्टि से भरा बौद्धिक कार्य.

संवाद | किताबें, जिनसे झांक रहा है एक …

इतिहास
स्त्री-विमर्श

स्त्री का उद्विकास

एक गहन नृतत्वशास्त्रीय अध्ययन

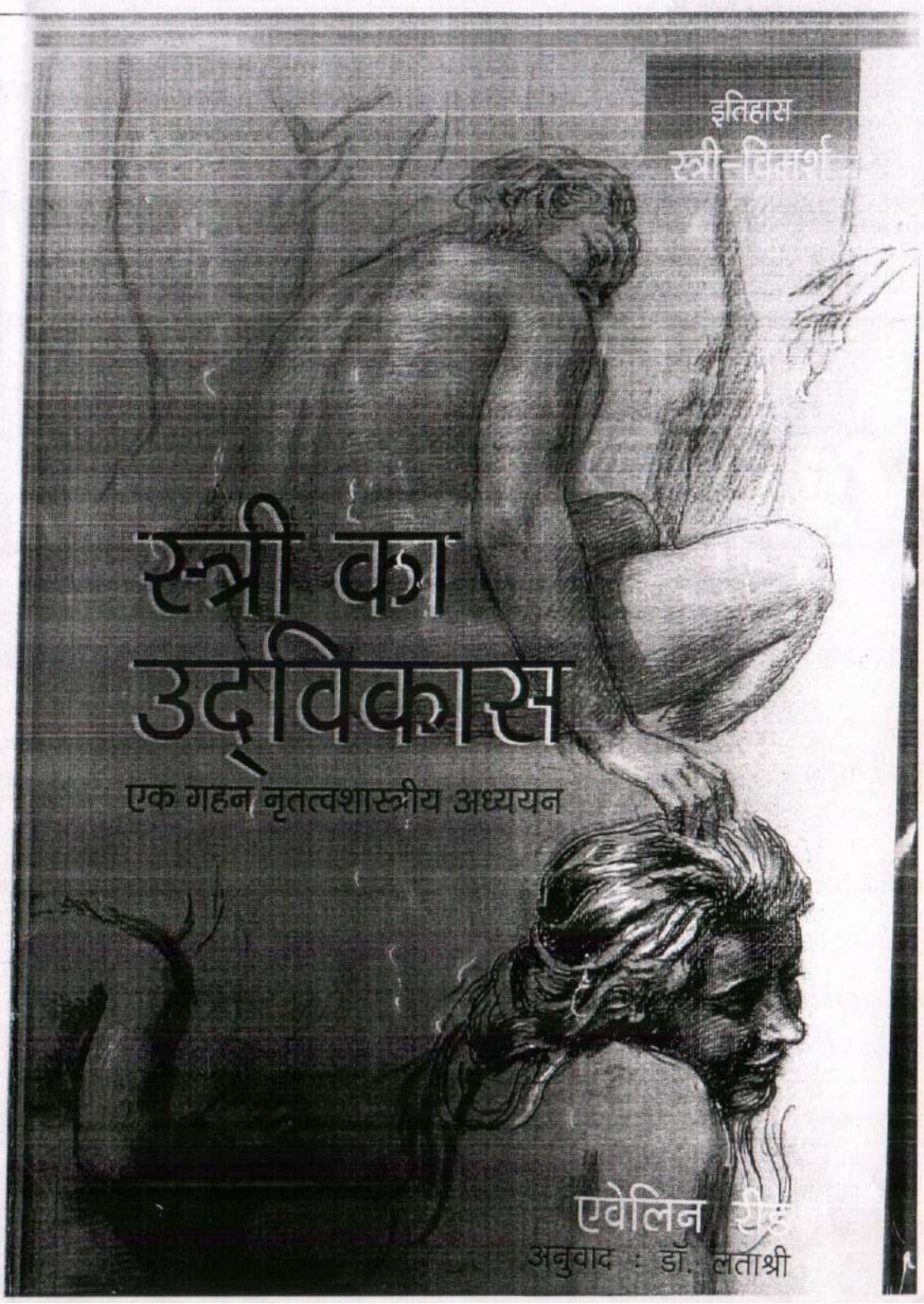

एवेलिन रीड
अनुवाद : डॉ. लताश्री

izksñ twjk gksjks

प्रो. जुरा होरो का जन्म 03 अगस्त 1965 ई. को पिता – श्री गुरु मुंडा होरो एवं माता – सुगी होरो की गोद में ग्राम – पापरा पोस्ट – बिरबंकी थाना – अड़की जिला – खूंटी 835210 हुआ था। मैट्रिक – प. सिंहभूम कराईकेला हाईस्कूल से हुई। इंटर डोरंडा कॉलेज रांची से हुई। बी.ए. की डिग्री – डोरंडा कॉलेज रांची से ही प्राप्त की। इसके बाद एम.ए. की डिग्री – जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची से प्राप्त की। बी. एड की डिग्री इन्हें विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग से प्राप्त हुई।

वर्तमान में मारवाड़ी कॉलेज रांची में सहायक प्राध्यापक के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं। आप की अनेक रचनाएं सेंगेल सतेंग अकड़ा, सनाम, एपील, सत जेवियर्स शोध पत्रिका एवं अखबारों में छपती रही हैं।

विशेष रूप से आपकी रुचि लोक नृत्य एवं मुंडारी लोक संगीत में है। अनेक नेशनल एवं इंटरनेशनल प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे हैं। टाटा ट्रस्ट के तत्वाधान में आयोजित 'संवाद' में भाग लेते रहे हैं। आपकी अपनी सांस्कृतिक दल (टीम) है जिसका नाम 'मुंडारी भाषा संस्कृति अकड़ा' रांची है। इस टीम के अध्यक्ष एवं संस्थापक प्रो. जुरा होरो स्वयं ही हैं।

दूरदर्शन में संगीत नाटक कार्यक्रम में भाग लेते रहे हैं। आकाशवाणी से लोक संगीत मुंडारी में अनेक प्रस्तुति आपने दी है। इसके अलावा नेशनल एवं इंटरनेशनल सेमिनारों में भाग लेते रहते हैं। तमाड़, बुंडू, सोनाहातु, चितरी, बदगाँव, सोयको, मरहदा, तपकरा, गोरबेड़ा जैसे झारखण्ड के तमाम अखड़ों की नृत्य शैली से समाज को सशक्त बनाने का काम करते रहे हैं। लातेहार, गढ़वा एवं हजारीबाग के अनेकों प्रांतों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुके हैं।

अंड़ादी दुरङ्को

जुरा होरो

Price: ₹ 500.00
ISBN: 978-93-5909-010-8

सत्यम् पब्लिशिंग हाउस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
चलभाष : +91-7042082850, 9899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

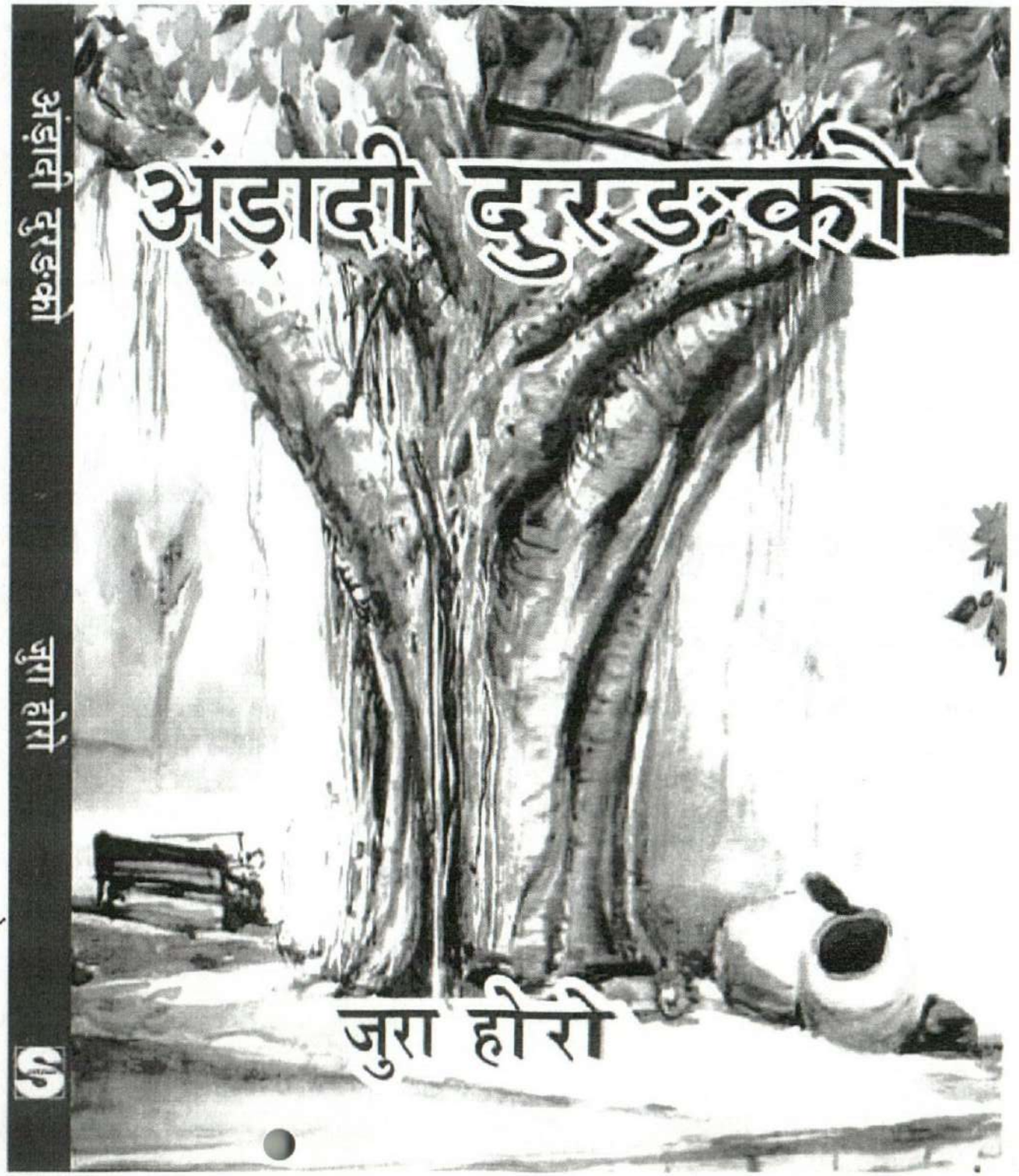

प्रो॰ जूरा होरो

प्रो. जुरा होरो का जन्म 03 अगस्त 1985 ई. को, पिता – श्री गुरु मुंडा होरो एवं माता – गुंगी होरो की गोद में ग्राम – घाघरा, पोस्ट – बिरबंकी, थाना – अंड़की, जिला – खूंटी 835216 हुआ था। मैट्रिक – प. सिंहभूम कराईकेला हाईस्कूल से हुई। इंटर डोरंडा कॉलेज राँची से हुई। बी.ए की डिग्री – डोरंडा कॉलेज राँची से ही प्राप्त की। इसके बाद एम.ए की डिग्री – जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची से प्राप्त की । बी. एड की डिग्री इन्हें बिनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग से प्राप्त हुई।

वर्तमान में मारवडी कॉलेज राँची में सहायक प्रध्यापक के रुप में अपना योगदान दे रहे हैं। आप की अनेक रचनाऐं सेंड़ा सेतेंग, अकड़ा, संगोम, एयोन, संत जेवियर्स शोध पत्रिका एवं अखबारों में छपती रही हैं।

विशेष रुप से आपकी रुचि लोक नृत्य, एवं मुंडारी लोक संगीत में है। अनेक नेशनल एवं इंटरनेशनल प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे हैं। टाटा ट्रस्ट के तत्वाधान में अयोजित **'संवाद'** में भाग लेते रहे हैं। आपकी अपनी संस्कृतिक दल (टीम) है जिसका नाम ''मुंडारी भाषा संस्कृति अकड़ा'' राँची है। इस टीम के अध्यक्ष एवं संस्थापक प्रो. जुरा होरो स्वंय ही हैं।

दूरदर्शन में संगीत नाटक कार्यक्रम में भाग लेते रहे हैं। आकाशवाणी से लोक संगीत मुंडारी में अनेक प्रस्तुति आपने दी है। इसके अलावे नेशनल एवं इंटरनेशनल सेमिनारों में भाग लेते रहते हैं। तमाड़, बुंडू, सोनाहातु, दिउड़ी, बंदगाँव, सोयको, मरङहदा, तपकरा, गौरबेड़ा जैसे झारखण्ड के तमाम अखड़ों की नृत्य शैली से समाज को ससक्त बनाने का काम करते रहे हैं। लतेहार, गड़वा, एवं हजारीबाग के अनेको प्रांतों में अपनी प्रातिभा का लोहा मनवा चुके हैं।

Price: ₹ 500.00
ISBN: 978-93-5909-010-8

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
चलभाष : +91-7042082850, 9899665801
ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

9 789359 090108

इचा: बा

प्रो॰ जुरा होरो

मुण्डा आदिवासी जीवन दर्शन

संकलन एवं सम्पादन

डॉ० खातिर हेमरोम डॉ० जोन कन्डुलना

मुंडा कोअः अनायुम सइति

(मुण्डारी लोक साहित्य)

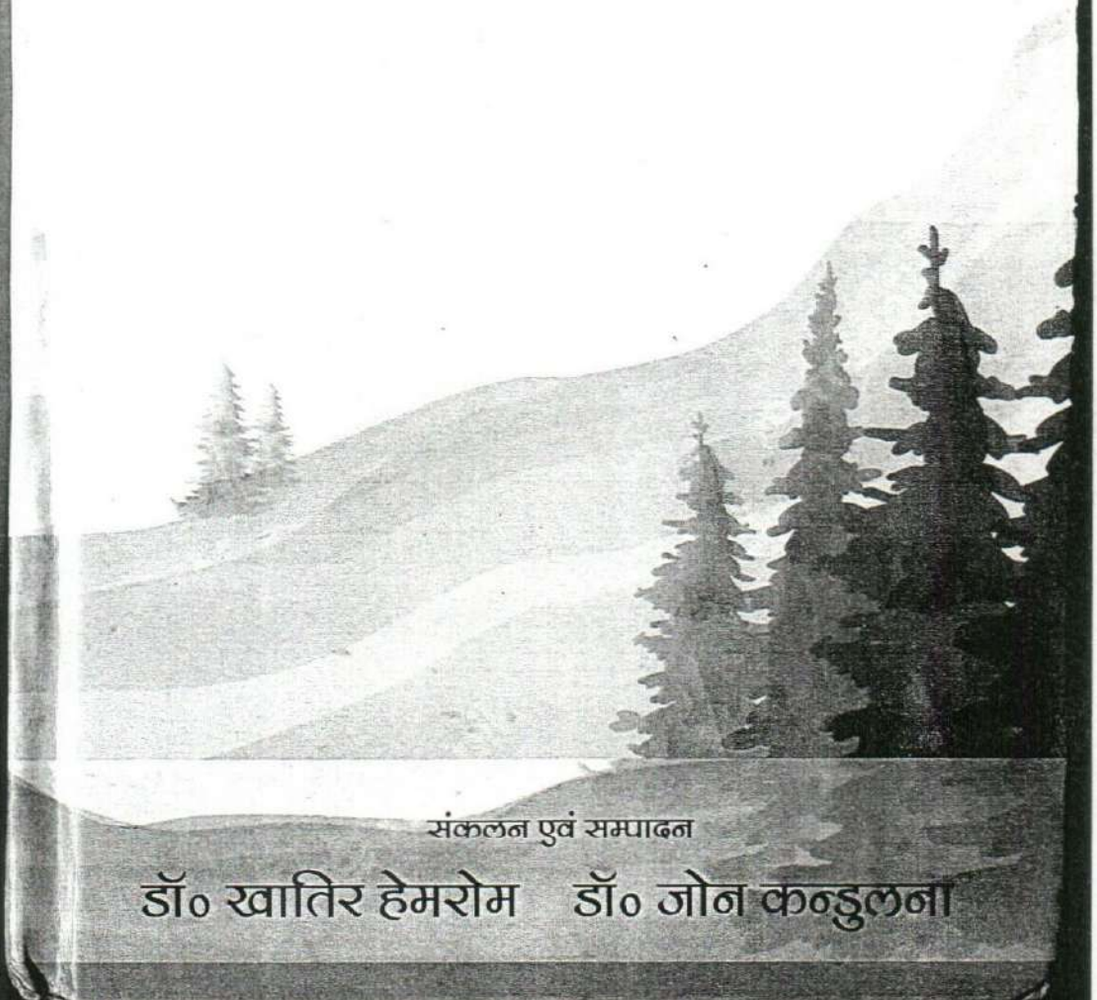

संकलन एवं सम्पादन

डॉ० खातिर हेमरोम डॉ० जोन कन्डुलना

बिरसा मुण्डा का उलगुलान

संकलन एवं सम्पादन

डॉ० खातिर हेमरोम

डॉ० जोन कन्डुलना

As per Finance Act, 2022

ASSESSMENT YEAR
2023–24

INCOME TAX LAW & PRACTICE

• with GST

Authors

R. K. Jain

B.Ed., M.Com., M.Phil.,
Department of Commerce
Aditya Mahavidyalaya, Gwalior

Dr. R. R. Sharma

Associate Professor
Head & Dean
Department of Commerce and
Management Studies
Marwari College, Ranchi
(Ranchi University, Ranchi)

CA Nikhil Gupta

CA, DISA, B. Com.
(Special Invitee of
GST & Indirect Taxes
Committee of ICAI 2023-24)

SCORER GURU PUBLICATIONS

वित्तीय लेखांकन

Financial Accounting

According to National Education Policy (NEP)- 2020
Four-Year Undergraduate Programme (FYUGP)

Authors

Dr. B. K. Mehta
M.Com., Ph.D.
Former Head & Dean
Dept. of Commerce
Jamshedpur Women's College, Jamshedpur
Kolhan University, Chaibasa

Dr. Vikas Kumar
M.Com., MBA(Fin.), Ph.D.
Assistant Professor
Department of Commerce and Management Studies, Marwari College, Ranchi
Ranchi University, Ranchi

Dr. Pankaj Kumar Sharma
M.Com., M.B.A.,Ph.D
Assistant Professor,
Department of Commerce

Roshan Baa, SJ
M.Com., PGDFM, MAEdu.,
MAPY, NET-JRF
Faculty of Commerce
St. Xavier's College, Ranchi,
Ranchi University, Ranchi

SHIKSHA SAGAR PUBLISHER & DISTRIBUTORS